आर.एन.आई. रजि० नं० HRHIN/2003/10425
डाक पंजीकरण संख्या : RTK/10/2014-16

सृष्टि संवत् 1960853116
विक्रम संवत् 2072
दयानन्दाब्द 192

सेवा में,

महर्षि दयानन्द सरस्वती

E-mail : aryapsharyana@gmail.com
Website : www.apsharyana.org

ओ३म्

आर्य प्रतिनिधि

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र दूरभाष : 01262-216222, Mob. 8901387993
विदेश में वार्षिक शुल्क : 75 डॉलर विदेश में आजीवन शुल्क : 300 डॉलर सम्पादक : मा० रामपाल आर्य

वर्ष : 12 अंक : 24 रोहतक, 21 नवम्बर, 2015 वार्षिक शुल्क : 150/- आजीवन 1500/-

प्रभु मिलन की राह

❑ कन्हैयालाल आर्य, ट्रस्टी परोपकारिणी सभा, अजमेर

उस प्रभु से मिलने के लिए न धन की आवश्यकता है, न रूप की, न यौवन की, न उच्च कुल की। उसको मिलने के लिए केवल लग्न और सच्ची तड़प की आवश्यकता है। जब बच्चा माता की गोद में जाने के लिए तड़प उठता है तो संसार की कोई शक्ति उसे रोक नहीं पाती। माता बच्चे को रोते हुए देखकर कभी खिलौनों से, कभी मिष्ठान्न से उसका मन बहलाने का प्रयास करती है, परन्तु बच्चा सब कुछ पाकर भी रोता जाये तो वह स्नेहमयी माँ उस नन्हें बच्चे को गोद में उठा ही लेती है और अमृतमय दूध पिलाने लगती है। उस समय बच्चा मुस्कराकर देखता है और मौन भाषा में पूछता है, ''माँ, जीत किसकी हुई तेरी या मेरी?'' मानना पड़ेगा कि अपनी सच्ची तड़प से बच्चा जीतता है और माँ हार जाती है। जब छोटे से बच्चे के अधिकार को प्रकृति की कोई शक्ति नहीं छीन सकती तो हम बच्चों की उस करुणामयी माँ तक जाने से हमें कौन रोक सकता है? बस, हृदय में सच्ची लगन और तड़प होनी चाहिए। जिस तरह एक भूखा मनुष्य एक रोटी के लिए और प्यासा मनुष्य पानी के लिए तड़पता है, उसी तरह हमें प्रभु को पाने के लिए तड़पना होगा। यदि हाँ, तो यही एकनिष्ठ प्रेम प्रभुप्राप्ति का सरल व सुगम उपाय है। आवश्यकताएं तो मनुष्य की बहुत असीमित हैं। जल, वायु, भोजन, वस्त्र, आवास न जाने कितनी इच्छाएँ हमारी हैं। इच्छाओं के आगे मानव निरन्तर जलता रहता है। एक इच्छा की पूर्ति दूसरी इच्छा को प्रज्वलित करने में आहुति का काम करती है और इन इच्छाओं की अग्नि को शान्त करने के लिए मनुष्य नाना प्रकार की सुख-सामग्रियों का संग्रह करता है। संग्रह की यह प्रवत्ति उसे लोलुप बना देती है, यही लोलुपता उसकी बुद्धि को हर लेती है और इस प्रकार विचलित मानव स्वत: अशान्ति का शिकार हो जाता है।

भर्तृहरि ने अपने वैराग्य शतक में इसका वर्णन इस प्रकार किया है—

क्रमशः पृष्ठ 7 पर...

पं० चन्द्रभानु आर्य की 85वीं जयन्ती पर हुआ भव्य आयोजन

महामहिम राज्यपाल आचार्य देवव्रत जी ने दिया राष्ट्ररक्षा के लिए हृदयस्पर्शी उद्‌बोधन

जींद, आर्यसमाज के समर्पित भजनोपदेशक, शांतिधर्मी के संस्थापक स्व. पं. चन्द्रभानु आर्योपदेशक की 85 वीं जयन्ती के उपलक्ष्य में जींद में स्व. पं. चन्द्रभानु आर्योपदेशक धर्मार्थ ट्रस्ट व शांतिधर्मी मासिक के तत्त्वावधान में भव्य कार्यक्रम का आयोजन किया गया। स्थानीय हिन्दू कन्या महाविद्यालय के सभागार में हजारों लोगों ने स्व. पं. चन्द्रभानु जी को श्रद्धांजली अर्पित की। भजन संध्या के रूप में आयोजित इस गरिमामय समारोह के मुख्य अतिथि हिमाचल प्रदेश के महामहिम राज्यपाल श्री आचार्य देवव्रत जी थे। समारोह की अध्यक्षता नगर के प्रमुख समाजसेवी राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रमुख श्री नरेन्द्र गुप्ता ने की। संभालका से माननीय मा. प्रेमसिंह जी, पूर्व आई ए एस श्रीमती जयवन्ती श्योकन्द, पूर्व उपकुलपति श्री ए के चावला, हिन्दी साहित्य प्रेरक संस्था के प्रा. रामफल खटकड़, श्री धर्मवीर आर्य बीईओ, स्वामी रामवेश, आचार्य आत्मप्रकाश, विभिन्न समाजसेवी संस्थाओं के सदस्यगण व नगर की सभी आर्यसमाज संस्थाएँ इस अवसर पर उपस्थित थीं। इण्डस शिक्षण संस्थाओं के निदेशक, प्रमुख शिक्षाविद् श्री सुभाष श्योराण ने ट्रस्ट व शांतिधर्मी की ओर से स्वागत भाषण करते हुए कहा कि यह सम्पूर्ण आर्यजगत् के लिए गौरव का विषय है कि शिक्षा, गौरक्षा और जैविक खेती के लिए अपना जीवन समर्पित करने वाले स्वामी दयानन्द के सच्चे अनुयायी श्रद्धेय आचार्य जी को हिमाचल प्रदेश के राज्यपाल के पद पर प्रतिष्ठित किया गया है। आर्यजगत् के सुप्रसिद्ध भजनोपदेशक महाशय रामनिवास आर्य, पानीपत ने अपने प्रभावशाली प्रस्तुतिकरण में समाजसुधार के लिए जबरदस्त प्रेरणा दी। स्व. पं. चन्द्रभानु आर्य के शिष्य महाशय रामकुमार आर्य ने भी स्व. पं. चन्द्रभानु आर्य की रचनाओं को सुनाकर खूब वाहवाही लूटी। पं. चन्द्रभानु आर्य की छह पौत्रियों कु. सुशीला आर्या, श्रुति आर्या, सुमेधा आर्या, प्रतिभा, प्रतिष्ठा व आस्था आर्या द्वारा सुमधुर संगीत के साथ प्रस्तुत भजनों को श्रोताओं द्वारा खूब पसन्द किया गया। कैप्टन महावीर सिंह ने कहा कि स्व. पं. चन्द्रभानु आर्य जी

पं. चन्द्रभानु आर्य की 85वीं जयन्ती पर शांतिधर्मी द्वारा आयोजित समारोह में हिमाचल प्रदेश के राज्यपाल महामहिम आचार्य देव्रवत जी को अभिनन्दन प्र भेंट करते पं. जी के सुपुत्र रवीन्द्रकुमार आर्य व पौत्र सत्यव्रत आर्य।

की प्रेरणाओं से हजारों परिवारों का निर्माण हुआ, जिसका उदाहरण मैं स्वयं हूँ। मैंने अपने जीवन में जो प्राप्त किया वह सब पूज्य पण्डित जी की प्रेरणाओं का ही फल है।

समारोह के मुख्य अतिथि महामहिम राज्यपाल आचार्य देवव्रत जी ने स्व. पं. चन्द्रभानु आर्य जी को श्रद्धांजलि प्रकट करते हुए कहा कि मुझे उनके साथ बाल्यकाल से रहने का अवसर मिला। वे बहुत उच्च कोटि के चिन्तक और प्रचारक थे। मैंने उनको एक मिशनरी व्यक्तित्त्व के रूप में देखा है। उनकी कविताएँ अनुपम हैं। समय के अनुरूप बैठे बैठे कविता बना लेने की उनमें विलक्षण प्रतिभा थी। उनकी कोई बहुत बड़ी स्कूली शिक्षा हुई हो ऐसी बात नहीं है, लेकिन उनकी अनुपम प्रतिभा केवल भजन बनाने तक सीमित नहीं थी, वे आर्यसमाज के बहुत दबंग प्रचारक रहे हैं। मेरा उनके प्रति श्रद्धा का सबसे बड़ा कारण यह रहा कि वे जो मुंह से बोलते थे वैसा उनका जीवन रहा। वे दो तरह की जिन्दगी नहीं जीते थे। आदरणीय चन्द्रभानु जी हमारे उन प्रचारकों में से थे, जिन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन तपस्या का जीवन जिया, अभावों मे रहे लेकिन जीवन में कभी सिद्धान्तों से समझौता नहीं किया।

आचार्यजी ने आर्यसमाज के भजनोपदेशकों को नमन करते हुए कहा कि उन दिनों आने जाने के साधन होते नहीं थे, सड़कें नहीं थीं, बिस्तर भी लोग देते नहीं थे। ये लोग कंधे पर बिस्तर रखकर, बगल में ढोलक बाजा दबाकर कच्चे रास्तों को, पगडण्डियों को तय करके गांव में जाते थे। वहाँ समाज के उत्थान की बातें, गोपालन की बातें, लोगों के बसने बसाने की बातें, वेद और आर्य समाज की बातें करते थे। इस प्रकार से पूरा उत्तर भारत आर्यसमाज बन गया था। आज दुर्भाग्य है कि हमारी वह भजनोपदेशकों की परम्परा लुप्त होती जा रही है। उन्होंने महाशय रामनिवास आर्य को आह्वान किया कि वे अपने जैसी दो चार टीमें और तैयार करें। मंच पर उपस्थित पं. रामनिवास जी, पं. रामकुमार जी व पं. रामेश्वर जी का उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा कि इन लोगों ने अपने सुखों को त्यागकर दूसरों के सुख दुःख को अपना समझा है। आचार्य जी ने कहा कि जब मैं यहाँ आया तो हमारी छह बेटियाँ मंच पर बैठकर गजब के गीत गा रही थी। मुझे जानकर बहुत खुशी हुई कि ये बेटियाँ पं. चन्द्रभानु आर्य की पौत्रियाँ हैं। ये था माननीय पं. चन्द्रभानु जी का जीवन! कि वे जो कहते थे, वही जीवन में करते थे। उनके इस व्यवहार का प्रभाव उनके सुपुत्रों पर पड़ा, और सुपुत्रों के बाद वे विचार पौत्र पौत्रियों में भी चले गए। इस प्रकार उन्होंने परिवार के निर्माण की जिम्मेवारी को भी निभाया।

ऋषि दयानन्द व आर्यसमाज को दिया श्रेय

आचार्य जी ने सभा में उपस्थित हजारों लोगों का धन्यवाद करते हुए कहा कि आज जो ये पद और सम्मान मुझे मिला है, मैं ईमानदारी से इस बात को कह रहा हूँ कि इसमें मेरा अपना कुछ भी नहीं है। इस सम्मान को मैं केवल ऋषि दयानन्द को समर्पित करता हूँ, आर्यसमाज को समर्पित करता हूँ और आप सब भाईयों को समर्पित करता हूँ जिन्होंने समय समय पर मुझे स्नेह दिया, अपनापन दिया। महर्षि दयानन्द के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करते हुए महामहिम ने कहा कि गुजरात से एक लंगोटी वाला साधु आया जिसने समाज के कल्याण के लिए अपने जीवन को होम दिया। आचार्य जी ने उदयपुर के महंत की गद्दी ठुकराने के प्रकरण का उल्लेख करते हुए बताया कि दयानन्द को प्रलोभन दिया गया कि उन्हें गद्दी का महंत बना देंगे। शिव का अवतार घोषित कर देंगे, आप केवल मूर्ति पूजा का खण्डन करना बंद कर दो। दयानन्द ने इस प्रलोभन को ठुकराते हुए कहा कि मैं तुम छोटे से राजा की बजाय सृष्टि के स्वामी परमेश्वर का आज्ञापालन नहीं छोड़ सकता। आचार्य जी ने अपने प्रेरणास्रोत स्वामी दयानन्द के उस प्रकरण का उल्लेख करके पूरी सभा को भावुक कर दिया जब एक निर्धन माता ने अपने मृत पुत्र के शव को नदी में बहा दिया था। आचार्य जी ने कहा कि स्वामी दयानन्द सोने की चिड़िया अपने देश की दुर्दशा और निर्धनता पर उस दिन इतना रोये जितना कि किसी और बात पर कभी नहीं रोये थे। आचार्य जी ने कहा कि इस पद पर रहते हुए वे राष्ट्र और समाज के उत्थान के लिए ऋषि दयानन्द की प्रेरणा को क्रियान्वित करते रहेंगे । आचार्य जी ने बताया कि हिमाचल राजभवन में मांस और शराब परोसा जाता था, उन्होंने जाते ही उस स्थान को तुड़वा दिया। उस स्थान पर अब यज्ञशाला है। हिमाचल राजभवन में अब प्रतिदिन यज्ञ होता है, यज्ञ के बिना वहाँ किसी को भोजन नहीं मिलता। राजभवन के भोजनालय की पहली चार रोटियाँ गौ माता को समर्पित की जाती हैं, उसके बाद ही भोजन किया जाता है। उन्होंने गौ पालन और जैविक खेती के लिए निरन्तर किये जा रहे प्रयासों का उल्लेख करते हुए कहा कि वे हिमाचल में इस दिशा में धरातल पर कार्य कर रहे हैं। उन्होंने नशे की बढ़ती प्रवृत्ति पर चिन्ता प्रकट करते हुए कहा कि वे शीघ्र ही नशामुक्त हिमाचल अभियान प्रारम्भ कर रहे हैं, ताकि देश के युवाओं को बरबाद होने से बचाया जा सके। आचार्य जी अपने पौने घंटे के भाषण में राष्ट्रोत्थान के

क्रमशः पृष्ठ 8 पर.....

आत्मा का दर्शन

-: वेद-मन्त्र :-

इच्छन्नश्वस्य यच्छिरः पर्वतेष्वपश्रितम्।
तद्विदच्छर्यणावति॥ (साम० 914)

अर्थ—(पर्वतेषु) मेरुदण्ड में स्थित चक्रों में (अपश्रितम्) स्थित (अश्वस्य) शरीर में व्याप्त आत्मा का (यत् शिरः) जो मुख्य स्थान है (तत् इच्छन्) उसे जानने की इच्छा वाले योगी ने उसे (शर्यणावति) हृदय में (विदत्) प्राप्त किया।

पूज्य आचार्य बलदेव जी

आत्मा का स्थान कहाँ है? और आत्मा विभु है या परिच्छिन्न, इसमें अनेक मत हैं। यदि आत्मा को विभु माने तो जागृत, स्वप्न, सुषुप्ति, मरण, जन्म, संयोग, वियोग, जाना, आना कभी नहीं हो सकता। इसलिये जीव का स्वरूप अल्पज्ञ, अल्प अर्थात् सूक्ष्म है और वह परिच्छिन्न है।

आत्मा का निवास स्थान हृदय है। इसमें कुछ विद्वान् मस्तिष्क गत हृदय और कुछ वक्षस्थल में दोनों स्तनों के मध्य में स्थित हृदय को ही उसका स्थान मानते हैं। स्वामी दयानन्द जी की भी यही मान्यता है। सामान्य रूप में जाग्रत अवस्था में आत्मा मस्तिष्क गत हृदय में मन, बुद्धि और ज्ञानेन्द्रियों के साथ सक्रिय रहता है। यह उसका कार्यालय है जहाँ से वह इन्द्रियों के माध्यम से बाह्य पदार्थों का ज्ञान प्राप्त करता रहता है। क्रमशः —आचार्य बलदेव

महर्षि दयानन्द जी का 132वाँ निर्वाण दिवस सम्पन्न

पानीपत। आर्य बाल भारती पब्लिक स्कूल पानीपत के तत्त्वावधान में आर्यसमाज के संस्थापक, युगप्रवर्तक, महान् समाज-सुधारक महर्षि दयानन्द सरस्वती का 132वाँ निर्वाण दिवस दिनांक 9.11.2015 सोमवार को विद्यालय के मान्य निदेशक आचार्य श्री अभय आर्य जी की अध्यक्षता में उत्तम रूप से समारोह पूर्वक सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर विद्यालय के बच्चों को भाषण प्रतियोगिता का आयोजन हुआ जिसमें गौरव पांचाल (गुरुदत्त सदन) ने महर्षि दयानन्द के जीवन पर प्रकाश डालते हुए उन्हें महान् सुधारक बताकर प्रथम स्थान प्राप्त किया। अमन मलिक (दयानन्द सदन) ने अपने विचार प्रस्तुत कर कहा कि महर्षि एक महान् शिक्षाविद् तथा विद्वान् थे, उसे द्वितीय स्थान प्राप्त हुआ। अंशु वधवा (श्रद्धानन्द सदन) ने तृतीय स्थान प्राप्त कर कहा कि महर्षि दयानन्द का जीवन नारी उत्थान के लिए समर्पित रहा। सांत्वना पुरस्कार हरप्रीत को मिला। विद्यालय के प्राचार्य श्रीमती रेखा शर्मा ने कहा कि महर्षि दयानन्द जी के शिक्षा के माध्यम से जनजागृति का अभियान चलाकर सभी को जागरूक किया। कार्यक्रम के अध्यक्ष आचार्य अभय आर्य जी ने कहा कि महर्षि जी ने अंधविश्वासों और कुरीतियों पर वेद तर्कों से कुठाराघात कर वैदिक सिद्धान्तों का प्रचार व प्रसार किया। विद्यालय के बच्चों ने अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन करते हुए ग्रीटिंग कार्ड, दीपक तथा मोमबत्ती डेकोरेशन प्रतियोगिता में भाग लेकर विद्यालय को गौरवान्वित किया।

शिवांगी, शिवानी, रीतु, कोमल, रमनीत, मानवी, वेशिका, रुहानी, काजल, स्वाति, नीतू, अंशु आदि छात्राओं ने महर्षि दयानन्द के जीवन का गुणगान करते हुए "सौ बार जन्म लेंगे, जग में वेदों को जब तक निशानी रहे, भगवान आर्यों को पहली लगन लगा दे, कोई जहर पिलाये कोई ईंट बरसाए राह में" आदि भजन प्रस्तुत कर ऋषि को स्मरण किया। यूनिक मलिक (9th) कक्षा के छात्र ने ईश्वर के 100 नामों का वाचन किया तो अमित (8th) कक्षा के छात्र ने प्रातःकालीन मन्त्रों को सुनाकर सभी को मन्त्रमुग्ध कर दिया।

मंच संचालन करते हुए विद्यालय के संस्कृत व धर्माचार्य आचार्य राजकुमार शर्मा ने महर्षि दयानन्द के कार्यों को स्मरण करते हुए कहा कि युगों-युगों तक महर्षि के वेदप्रचार के कार्यों को तथा समाज-सुधार के कार्यों को सम्मान के साथ स्मरण किया जाएगा। उन्होंने युगान्तकारी क्रान्ति का आगाज किया। निर्णायक पद पर श्रीमती दर्शना शर्मा व श्रीमती पुष्पा शर्मा विराजमान रहे।

इस अवसर पर श्री सन्दीप आर्य, श्री जगदीश आर्य, श्री बिजेन्द्र गुप्ता, श्री रविकान्त अग्रवाल, श्रीमती सुरेन्द्रजीत शर्मा, ललिता आर्या, जितेन्द्र आर्य विशेष रूप से उपस्थित रहे।

—रेखा शर्मा, प्रिंसिपल, आर्य बाल भारती पब्लिक स्कूल, पानीपत

सुखी कैसे रहें?

❑ भद्रसेन, 182-शालीमार नगर, होशियारपुर-146001 # 9464064398

आज हर देश, धर्म, वर्ग और अवस्था से सम्बन्ध रखने वाला व्यक्ति सुख, शान्ति और सन्तोष चाहता है। हर कार्य को करते हुए प्रत्येक की यथाशक्ति मनोभावना यही होती है कि मुझे हर तरह से सुख ही मिले तथा कभी भी किसी से दुःख प्राप्त न हो। क्योंकि दुःख में हर एक बेचैन हो जाता है और तब उसको अपना जीवन भी भार मालूम होता है। इसीलिए ही प्रत्येक प्रातः से सायं तक सुख तथा सुख-साधनों के संचय में लगा रहता है और रात को सोता भी इसी के लिए ही है। अर्थात् सबको हर समय सुख प्राप्ति की धुन सवार रहती है। अत एव सभी मनुष्यों के सभी प्रकार के कार्यों और प्रयासों का एकमात्र केन्द्रबिन्दु सुख ही है। यही एक ऐसी बात है कि जिसके सम्बन्ध में सब एक स्वर से एकमत हैं, चाहे सबकी दृष्टि में सुख का स्वरूप और मार्ग भिन्न क्यों न हों?

1. सुख-दुःख की परिभाषा-कुछ का विचार है कि संसार के पदार्थों में सुख है और कुछ समझते हैं कि अपने अन्दर ही सुख है। रोजमर्रा के जीवन की दृष्टि से जब हम सुख-दुःख के सम्बन्ध में सोचते हैं तो ये दोनों पक्ष कुछ अधूरे ही लगते हैं। क्योंकि यदि अपने अन्दर ही केवल सुख-दुःख हो तो फिर भौतिक पदार्थों के बिना भी सुख होना चाहिए। जबकि अपने अन्दर सुख मानने वाले की भौतिक साधन जुटाते हुए देखे जाते हैं। यदि केवल संसार के पदार्थों में ही सुख हो तो पदार्थ रखने वालों को कभी दुःख नहीं होना चाहिए। और एक चीज हर स्थिति में एक-सी सुख देने वाली हो, पर ऐसा होता नहीं। पदार्थों से सुख मानने पर जो चीज किसी एक के लिए सुखदायक है, वह सबके लिए सदा सुख का कारण होनी चाहिए। अतः रोगी को भी स्वस्थ की तरह स्वादु भोज्य में स्वाद आना चाहिए?

प्रतिदिन के व्यवहार में हम ऐसा अनुभव करते हैं कि जब कोई पदार्थ या बात हमारे अनुकूल होती है या उसके व्यवहार से अपनी इच्छा के अनुकूल प्रतीति होती है तो हम उस सुख का अनुभव करते हैं या अपने आपको सुखी समझते हैं। अतः सबका अनुभव तो यही कहता है कि हम अनुकूलता में सुख और प्रतिकूलता में दुःख अनुभव करते हैं।

2. चाहना और सुख-प्रत्येक अपनी आशा की पूर्ति पर सुखी और उसके पूरा न होने पर दुःखी होता है। जैसे कि किसी को प्यास लगी हो तो वह अपने आपको बहुत दुःखी मानता है और यहां तक कहता है कि हाय! मैं प्यास से मर रहा हूँ। जल के मिल जाने पर वह एकदम सुखी हो जाता है। अतः जिस व्यवहार से बाधा, रुकावट और इच्छा की पूर्ति में अड़चन आती है, वह भी या वही दुःख है। तभी तो हम देखते हैं कि जिसकी चाहनायें पूर्ण होती हैं, वही सुख, शान्ति प्राप्त करता है न कि केवल चाहनाओं को चाहने वाला। अतः जिसकी इच्छायें पूर्ण होती हैं, वही शान्त, सन्तुष्ट, निश्चिन्त और सुखी होता है। ऐसी स्थिति के लिए ही कहा है—

चाह गई चिन्ता मिटी,
मनुआ बे-परवाह।
जिनको कछु नहीं चाहिए,
सो ही शहनशाह॥

हाँ, जब तक भौतिक शरीर है, तब तक तो कोई चाह रहित हो नहीं सकता। चाहों के पूरा न होने पर व्यक्ति इनकी पूर्ति की चिन्ता में ही लगा रहता है। संसार में चिन्ता ही सबसे बड़ी दुःख की जड़ है। दूसरी ओर निश्चिन्त होने पर ही व्यक्ति सन्तुष्ट और सुखी होता है।

3. सन्तोष और सुख-वस्तुतः वही व्यक्ति सन्तुष्ट है, जिसकी प्रतिदिन की जरूरतें पूरी हो जाती हैं। जो इस दृष्टि से निश्चिन्त नहीं, वह कभी सन्तुष्ट भी नहीं हो सकता। यह ठीक है कि कुछ व्यक्ति स्वभाव से सन्तोषी होते हैं, जो हर हाल में मस्त रहते हैं। परन्तु ऐसे लाखों में एकाध ही होते हैं, दुनिया में ऐसा व्यक्ति मिलना कठिन है और न ही ऐसे सन्तोष से दुनिया का व्यवहार चल सकता है। आजकल प्रायः सन्तोष के नाम पर आलस्य और अन्याय सहन का अभिनय किया जाता है। शास्त्रों में सन्तोष का जो वर्णन मिलता है, वह चाहना की पूर्ति होने पर ही देखा जाता है। अन्यथा **'ढिड्डे न पइयां रोटिया-ते सब्भे गल्लां खोटियां'**। हां, व्यर्थ की चाहना से तो कुछ बनता नहीं। यथासंभव प्रयास करने पर जो न्यायोचित फल प्राप्त हो, उसमें सन्तुष्ट होना ही सन्तोष है।

हमारा मन इच्छाओं का भण्डार है, मन में उठने वाली इच्छाओं की कोई सीमा नहीं। अतः किसी की भी सारी इच्छायें पूरी नहीं हो सकतीं। ऐसी स्थिति में सन्तोष का सहारा लेकर ही जीवन सुखी हो सकता है अन्यथा हर इच्छा की पूर्ति के चक्र में व्यक्ति तड़प-तड़प कर ही रह जाता है। क्रमशः

छात्रवृत्ति एवं अभिनन्दन समारोह का सफल आयोजन

मानव सेवा प्रतिष्ठान नॉर्थ अमेरिकन जाट चैरिटी एवं जाट मित्र मण्डल के संयुक्त तत्त्वावधान में दिनांक 25.10.2015 को चौधरी छोटूराम भवन, केशव पुरम् दिल्ली के प्रांगण में सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम का शुभारम्भ पण्डित सत्यपाल जी पथिक एवं श्री चन्द्रदेव शास्त्री जी द्वारा हुआ। यजमान आसन को श्री नरजीतसिंह छिकारा (मंत्री जाट मित्र मण्डल), श्रीमती पण्डिता धर्मवती ओरी (रोटरडैम, हॉलैण्ड), श्री बलजीत सिंह सांगवान आदि ने सुशोभित किया। पण्डित सत्यपाल पथिक जी ने अपने भजन-प्रवचन के माध्यम से यज्ञ-महिमा का गुणगान किया। प्रात:राश के पश्चात् 10 बजे रामपाल शास्त्री, चन्द्रदेव शास्त्री एवं श्री नरजीतसिंह छिकारा के संयोजन में श्री आजाद सिंह लाकड़ा (प्रधान, जाट मित्र मण्डल) की अध्यक्षता में एवं श्री रामस्वरूप आर्य (प्रधान, नॉर्थ अमेरिकन जाट चैरिटी), श्री मेजर जनरल रणजीतसिंह (कुलपति, चौधरी रणवीर विश्वविद्यालय, जीन्द, हरयाणा), श्री श्रीओम् दलाल (अमेरिका) के निर्देशन में मुख्य मञ्च से कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ, जिसमें आर्ष कन्या गुरुकुल नरेला (दिल्ली), कन्या गुरुकुल महाविद्यालय (चोटीपुरा, उ०प्र०) की छात्राओं ने वैदिक ऋचाओं एवं भजनों के गायन से सभी को मन्त्रमुग्ध कर दिया।

रामपाल शास्त्री द्वारा मानव प्रतिष्ठान के इतिहास पर प्रकाश डाला गया तथा नरजीत छिकारा ने जाट मित्र मण्डल के इतिहास को बताया। आगन्तुक अतिथि महानुभावों का सोमदेव शास्त्री, हरवीरसिंह शास्त्री, अजय कुमार शास्त्री, डॉ० कंवरसिंह आदि मानव सेवा प्रतिष्ठान की कार्यकारिणी एवं जाट मित्र मण्डल की ओर से स्मृतिचिह्न एवं ओ३म् के पटकों से सम्मानित किया।

इस कार्यक्रम में आर्यजगत् के नौ विद्वान् विदुषियों का सम्मान करते हुए उन्हें प्रशस्ति-पत्र, शॉल, स्मृतिचिह्न एवं 11-11 हजार रुपये की सम्मानित राशि से सम्मान किया गया जिसमें 1. आर्यजगत् के प्रसिद्ध भजनोपदेशक पं० सत्यपाल पथिक (अमृतसर, पंजाब) को स्व० श्री रामपत आर्य इस्माइला रोहतक हरयाणा स्मृति सम्मान से, 2. स्वामी सुधानन्द योगी (योगाश्रम लालपुरा, ऊजोली, अलवर, राजस्थान) को स्व० श्री मास्टर रतनसिंह जी डबास, सुलतानपुर डबास, दिल्ली स्मृति सम्मान से, 3. डॉ० सरिता आर्या (प्राध्यापिका, वैदिक कन्या गुरुकुल, ऐंचरा कलां, जीन्द, हरयाणा) को श्रीमती लक्ष्मीदेवी नोलथा पानीपत हरयाणा स्मृति सम्मान से, 4. डॉ० कमलेश आर्या (आर्य सुगन्ध संस्थान, नजीबाबाद, बिजनौर) को स्व० श्रीमती इतवारिया रामदास तिवारी हालैण्ड स्मृति सम्मान से, 5. प्रचारक रणजीत जी आर्य (ग्राम गौडपाली, बरगढ़, उड़ीसा) को श्रीमती मुख्यत्यारी देवी बेरी झज्जर हरयाणा स्मृति सम्मान से, 6. आचार्य सुमन (साधना) आर्या (पतञ्जलि आयुर्वेदिक कालेज, हरिद्वार) को स्व० श्रीमती शीलवती देवी बल्लभगढ़, भरतपुर राजस्थान स्मृति सम्मान से, 7. श्री बुद्धदेव शास्त्री (आचार्य, गुरुकुल नरसिंह नाथ, बरगढ़, उड़ीसा) को स्व० श्री पं० ऋषि बलदेव तिवारी जी हालैण्ड स्मृति सम्मान से, 8. महात्मा वेदपाल आर्य (आर्यसमाज थर्मल कॉलोनी, पानीपत, हरयाणा) को चौधरी राजेन्द्रदेव सिंह (याकूबपुर, झज्जर हरयाणा) स्मृति सम्मान से, 9. पूनम साहू (उत्तरकाशी, उत्तराखण्ड) को श्रीमती वेदकौर (याकूबपुर, झज्जर हरयाणा) स्मृति सम्मान से सम्मानित किया गया। इस कार्यक्रम में स्वामी सुधानन्द जी योगी (अलवर), महात्मा वेदपाल जी आर्य (पानीपत) आदि का उद्‌बोधन सराहनीय रहा।

नॉर्थ अमेरिकन जाट चैरिटी द्वारा चयनित 82 छात्र-छात्राओं को लगभग 13 लाख पचास हजार रुपये की सहायता राशि छात्रवृत्ति श्री रामस्वरूप आर्य, श्री श्रीओम् दलाल, श्रीमती सन्तोष आर्या, मेजर जनरल कुलपति रणजीत सिंह, स्वामी धर्मेश्वरानन्द जी (महामन्त्री, आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश), डॉ० धर्मपाल जी (भूतपूर्व कुलपति, गुरुकुल कांगड़ी) एवं आजादसिंह लाकड़ा (प्रधान, जाट मित्र मण्डल, दिल्ली) के करकमलों से वितरित की गई।

मानव सेवा प्रतिष्ठान द्वारा भी 125 विभिन्न शिक्षा संस्थाओं, गुरुकुलों के छात्र-छात्राओं को 7 लाख रुपये की सहायता प्रदान कर उन्हें आगे बढ़ने की प्रेरणा दी। इस अवसर पर मुख्य वक्ता पूज्य स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती ने छात्रवृत्ति के महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए ऐतिहासिक विवरण बताये। अध्यक्षीय भाषण करते हुए श्री आजादसिंह लाकड़ा ने मानव सेवा प्रतिष्ठान नॉर्थ अमेरिकन जाट चैरिटी के सभी कार्यकर्त्ताओं का धन्यवाद किया। चौ० छोटूराम एवं श्री साहिबसिंह वर्मा जी का उल्लेख करते हुए उन्हें अपना प्रेरणास्रोत बताया।

—डॉ. कँवरसिंह, महामन्त्री,
मानव सेवा प्रतिष्ठान, दिल्ली

सर्वसाधारण के लिए दर्शन अध्यापन

दिनांक 1.11.2015 को दर्शन योग महाविद्यालय महात्मा प्रभु आश्रित कुटिया सुन्दरपुर में ब्रह्मचारियों के प्रवेश के साथ-साथ स्वामी विवेकानन्द जी के निर्देशन में स्वामी ब्रह्मविदानन्द जी के प्राचार्यत्व में तथा स्वामी आशुतोष जी के मुख्य अध्यापक रूप में अध्यापन कार्य भी चल पड़ा है। दिनांक 22.11.2015 से नियमित रूप से प्रति रविवार को दर्शनों का अध्यापन आरम्भ हो रहा है। आवेदन के लिए सम्पर्क करें।

दर्शन योग महाविद्यालय, प्रभु आश्रित कुटिया, सुन्दरपुर,
रोहतक-124001 Mob. 7027026175, 7027026176
E-mail : darshanyogsundarpur@gmail.com,
Web : darshanyog.org

॥ ओ३म्॥

गुरुकुल झज्जर का स्थापना शताब्दी समारोह

सभी आर्यजनों को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि गुरुकुल झज्जर का शताब्दी समारोह तपोनिष्ठ आचार्य बलदेव जी की अध्यक्षता में बड़ी धूमधाम से 12, 13 मार्च 2016 (शनिवार, रविवार) को मनाया जा रहा है।

इस अवसर पर बड़े-बड़े राजनेता, संन्यासीगण, विद्वान् व प्रसिद्ध भजनोपदेशकों को आमंत्रित किया जाएगा।

आप सभी आर्यजनों से नम्र निवेदन है कि इस शताब्दी समारोह में उपस्थित होकर धर्मलाभ प्राप्त करें।

निवेदक :

विद्यार्यसभा, गुरुकुल झज्जर मो०नं० 9416055044

ऋषि दयानन्द की जय

❑ प्राचार्य अभय आर्य

दिनांक 7, 8, 9 नवम्बर 2015 को कोसली (रेवाड़ी) में हरयाणा राज्य स्तरीय स्कूली रस्साकशी प्रतियोगिता का आयोजन हुआ। इस प्रतियोगिता में गुरुकुल झज्जर की टीम के साथ-साथ आर्य बाल भारती विद्यालय पानीपत की टीम भी भाग ले रही थी। रोचक बात यह रही कि गुरुकुल झज्जर की अण्डर-19 टीम का मुकाबला सिरसा की टीम से हुआ। सिरसा की टीम ने जूते पहन रखे थे। लेकिन नंगे पैर वाले गुरुकुल झज्जर के ब्रह्मचारी रमेश ने मंच से माइक पर ऋषि दयानन्द, स्वामी ओमानन्द, वैदिक धर्म की जय के नारे लगाए। इसके बाद अण्डर-17 सेमी फाइनल मुकाबले में सिरसा व आर्य बाल भारती की टीम आमने-सामने थी। मैच से पहले हमारे बालकों ने गायत्री मंत्र का तीन बार जाप किया। मैंने देखा कि सिरसा वाले बालकों ने भी आंखें बन्द करके कुछ किया व बाद में '**धन-धन सतगुरु**' की जय का नारा लगाया। हमारे बालकों से हमने '**ऋषि दयानन्द की जय**' का नारा बुलवाया। प्रतियोगिता आरम्भ हो गई। सिरसा वाले बालकों ने अपने जूतों से गड्ढे करके मैदान में पैर जमा लिए थे। हमारे बालक नंगे पैर संघर्ष कर रहे थे। काफी देर तक रस्सा दोनों तरफ एक जैसा तुला रहा। दोनों ओर से दर्शक अपनी-अपनी टीम के उत्साह के लिए चीख रहे थे। अन्त में आर्य बाल भारती की टीम विजयी रही। अब प्रश्न यह उठता है कि यदि हम हार जाते तो क्या 'ऋषि दयानन्द की जय' का नारा सार्थक नहीं रहता? यदि सिरसा वाले जीत जाते तो क्या 'धन-धन सतगुरु की जय' का नारा सार्थक हो जाता? अब नीचे जो तथ्य दिए हैं, उसके आधार पर इसका विश्लेषण करते हैं—

आचार्य अभय आर्य

'**गुरुडम**' वाले मानते हैं कि गुरु की कृपा से सब कुछ सम्भव है। गुरु की कृपा से बिना औषधि के रोग ठीक, गरीबी से अमीरी, फेल से पास, हार से जीत, दुःख से सुख। गुरु ऐसे सुपर हीरो हैं जो सब हल चुटकी में कर सकते हैं। सिरसा वाले गुरु की ताकत के तो क्या कहने? ऊँ अल्लाह, गॉड आदि सबके मैसेजर, देवदूत, संदेशवाहक ये अकेले ही हैं। सिर्फ इन पर विश्वास कीजिए आपका भगवान् स्वयं खुश हो जाएगा। इसी के चलते '**गुरडम**' में फंसे लोग भगवान् पर भरोसा न करके गुरु पर भरोसा करते हैं। घर में, मन्दिर में गुरु की मूर्ति, उसके आगे धूप-बत्ती, मस्तक झुकाना, गुरु का नाम, गुरु का ध्यान।

ऋषि दयानन्द न केवल स्वयं को भक्त व भगवान् के बीच से हटाते हैं अपितु प्रभुभक्ति के विषय से भी भ्रम का निवारण कर उसके यथार्थ रूप को प्रस्तुत करते हैं। ऋषि दयानन्द द्वारा प्रतिपादित वैदिक सिद्धान्तों में ठगी का स्थान कहाँ?

'**सत्यार्थप्रकाश**' के सातवें समुल्लास में प्रश्न "**हम तो ऐसा मानते हैं कि ईश्वर चाहै सो करे क्योंकि उसके ऊपर दूसरा कोई नहीं है।**" का उत्तर देते हुए ऋषि लिखते हैं, "**जो तुम कहो कि सब कुछ चाहता और करता है तो हम तुमसे पूछते हैं कि परमेश्वर अपने को मार, अनेक ईश्वर बना, स्वयं अविद्वान्, चोरी, व्यभिचारादि पाप कर्म कर और दुःखी भी हो सकता है?**" आगे स्पष्ट करते हैं कि परमेश्वर सबकी भलाई और सबके लिए सुख चाहता है परन्तु स्वतन्त्रता के साथ किसी को बिना पाप किये पराधीन नहीं करता। प्रार्थना के विषय में लिखते हैं—ऐसी प्रार्थना कभी न करनी चाहिए और न परमेश्वर उसका स्वीकार करता है कि जैसे हे परमेश्वर! आप मेरे शत्रुओं का नाश, मुझको सबसे बड़ा, मेरी ही प्रतिष्ठा और मेरे आधीन सब हो जायँ इत्यादि.....हे परमेश्वर! आप हमको रोटी बनाकर खिलाइये, मकान में झाड़ू लगाइये, वस्त्र धो दीजिये और खेती बाड़ी भी कीजिये।

अतः बाल भारती विद्यालय के बालक यदि वह प्रतियोगिता हार भी जाते तो भी '**ऋषि दयानन्द की जय**' वाला नारा सार्थक रहता, क्योंकि ऋषि दयानन्द द्वारा प्रतिपादित सिद्धान्त सत्य-सनातन वैदिक तथा गुरुडम के छलावे से दूर हैं। गुरुडम वाले जीतकर भ्रम रूपी खाई की एक सीढ़ी और नीचे उतर आते हैं और हार पर तो उनके विश्वास की, सिद्धान्त की स्पष्ट निस्सारता ही है। तथ्यों के विश्लेषण के बाद तो प्रत्येक बुद्धिजीवी कह उठेगा—'**ऋषि दयानन्द की जय**'।

वार्षिक उत्सव सम्पन्न

दिनांक 31 अक्तूबर व 1 नवम्बर 2015 को आर्यसमाज मोखरा जिला रोहतक का वार्षिक उत्सव सम्पन्न हुआ। यज्ञ ब्रह्मा आचार्य वेदमित्र के सान्निध्य में सैकड़ों युवाओं ने आहुति प्रदान की। कार्यक्रम में श्री मलिक जी रिटायर्ड Rtd.SE, श्री प्रो० खटखड़ जी, श्री बलराज कुंडू ने भी अपने विचार रखे। श्री विद्यानन्द जी ने आर्यसमाज में अपने यज्ञोपवीतधारी मित्रों के सहयोग से युवाओं को निःशुल्क ट्यूशन पढ़ाते हुए सभी को यज्ञ-संध्या कंठस्थ करा दी।

—**मंत्री, आर्यसमाज मोखरा, रोहतक**

आर्यसमाजों के उत्सवों की सूची

1.	आर्यसमाज जवाहर नगर, पलवल	25 से 29 नव० 2015
2.	आर्यसमाज चरखी दादरी, जिला भिवानी	28 से 29 नव० 2015
3.	**आर्य युवा महासम्मेलन, पानीपत** स्थान-आर्य बाल भारती पब्लिक स्कूल, पानीपत	6 दिसम्बर 2015
4.	श्रीमद्दयानन्द वेदार्ष महाविद्यालय न्यास 119, गौतम नगर, नई दिल्ली-49	16 नव० से 6 दिस० 2015

—**सभामन्त्री**

अपील

सभी आर्यसमाजों, सदस्यों, सक्षम दानी महानुभावों से निवेदन है कि आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के परिसर में 24 कमरों का निर्माण कार्य चल रहा है। सभा कार्यालय परिसर में ऋषिलंगर (भोजनालय) चलता है। अतिथियों के लिए भोजन की नियमित सुन्दर व्यवस्था की जा रही है। सभा के ऋषिलंगर (भोजनालय) में **साधु-संन्यासी, वानप्रस्थी,** ब्रह्मचारी निःशुल्क भोजन करते हैं। साथ ही प्रतिदिन प्रातः-सायं नियमित रूप से यज्ञ किया जाता है। आप **अपनी वैवाहिक** वर्षगांठ, जन्मदिवस, गृहप्रवेश या अन्य अवसर पर सहयोग कर सकते हैं। सहयोगदाता का नाम सभा के साप्ताहिक **समाचार-पत्र** 'आर्य प्रतिनिधि' में प्रकाशित किया जायेगा। अतः समस्त दानी महानुभावों से अपील है कि सभा परिसर में चल रहे निर्माणकार्य एवं सभा के ऋषिलंगर भोजनालय हेतु अधिक से अधिक दानराशि एवं आटा, दाल, चावल, घी, गेहूँ अथवा अन्य प्रकार से सहयोग देकर एक आहुति अवश्य डालें और इस पवित्र यज्ञ के सफल संचालन में सहभागी बनें।

नोट—दो लाख पचास हजार रुपये देने वाले दानी महानुभावों का नाम नवनिर्मित कमरे के साथ उसके नाम का पत्थर लगाया जाएगा।

निवेदक—

आचार्य बलदेव	आचार्य विजयपाल	मा. रामपाल आर्य	कन्हैयालाल आर्य
सभा-संरक्षक	सभा-प्रधान	सभा-मन्त्री	सभा-कोषाध्यक्ष

सोलह कलायें

❑ स्वामी वेदरक्षानन्द सरस्वती, संरक्षक-आर्ष गुरुकुल कालवा

इस शरीर में ही सोलह कलाओं वाले पुरुष का निवास है। शरीर में स्थित आत्मा ही सोलह कलाओं वाला पुरुष है। जैसे चन्द्रमा जब सोलह कलाओं से युक्त होता तब पूर्ण चन्द्र (पूर्णिमा का चाँद) कहलाता है। ऐसे ही जिस पदार्थ की पूर्णता को बताना होता है उसे संस्कृत में षोडश कल्प अर्थात् सोलह कलाओं वाला कह देते हैं। इसी शरीर में यह आत्मा सभी आवश्यक वस्तुओं से युक्त होने पर 'षोडशकल्प' सोलह कलाओं वाला कहलाता है। उपनिषत्कार कहते हैं आत्मा ने सोच विचार किया कि वे कौन-सी आवश्यक वस्तुएँ हैं जिनकी प्राप्ति से मैं प्रतिष्ठित हो जाऊँगा। उन सभी आवश्यक वस्तुओं को अपने साथ लेकर आत्मा इस शरीर में आया। वे सोलह वस्तुयें निम्न हैं— अन्य आवश्यक तत्त्व भी इन्हीं सोलह कलाओं में अन्तर्भूत हो जाते हैं।

स्वामी वेदरक्षानन्द जी

(1) **प्राण**-यदि आत्मा के साथ प्राण न हो तो यह शरीर क्षणभर भी जीवित नहीं रह सकता। अत: प्राणरूपी कला की उपस्थिति आवश्यक है। प्राण ही जीवन है। यही प्रथम कला है। (2) **श्रद्धा**-बिना श्रद्धा के मानव जीवन अपूर्ण है। सब प्रकार की उन्नति और विकास के लिए जीवन में श्रद्धा का होना आवश्यक है। (3 से 7) **पंचभूत**-आकाश, वायु, जल, तेज, इन पांच तत्त्वों से शरीर का निर्माण हुआ है। इन पंचभूतों के बिना शरीर नहीं रह सकता। और ना ही भोग्य वस्तुयें रह सकती हैं। (8) **इन्द्रियाँ**-इन्द्रियों का होना भी अत्यन्त अनिवार्य है। इन्द्रियों द्वारा ही आत्मा शरीर में भोगों को भोगता है तथा विविध ज्ञान प्राप्त करता है। इनके बिना आत्मा पंगु (लंगड़ा) है। (9) **मन**-मन के बिना कोई भी इन्द्रिय अपने विषय को ग्रहण नहीं कर सकती। मन ही एक ऐसा माध्यम है जिसके द्वारा इन्द्रियों अपने विषयों का ज्ञान प्राप्त करती हैं। मन को '**ज्योतिषां ज्योति:**' कहा गया है। इसके साथ-साथ मन मनुष्य की उन्नति में भी अत्यन्त सहायक है। अत: मन की महत्ता के कारण इसे आत्मा की पृथक् कला कहा है। (10) **अन्न**-अन्न से अभिप्राय है सकल भोग्य-वस्तुयें जिसमें खाद्य और पेय आदि सभी आ जाती हैं। अन्न भी एक अपरिहार्य तत्त्व है। इसके बिना भी शरीर का रह सकना असम्भव है। अन्न भी शुद्ध और पवित्र अभिप्रेत है (होना चाहिये)। क्योंकि जैसा अन्न होगा वैसा ही मन बनेगा— '**आहारशुद्धौ सत्त्वशुद्धि:**'। (11) **वीर्य**-वीर्य के बिना शरीर का होना न होने के समान है। बलवान् शरीर ही धर्म का सम्पादन कर सकता है और आपत्तियों का मुकाबला कर सकता है। यही शरीर का मुख्यतम रस है और तत्त्व है। वीर्य से तपस्वी बनते हैं अत: इसका होना भी आवश्यक है। (12) **तप**-तपहीन व्यक्ति भी संसार में जीने योग्य नहीं। जिसमें तप नहीं वह इस जीवन-संग्राम में पद-पद पर आने वाली मुसीबतों का कदापि सामना नहीं कर सकता और उन पर विजय प्राप्त नहीं कर सकता। अत: जीवन में तप का होना अत्यन्त आवश्यक है। '**द्वन्द्वसहनं तप:**' अर्थात् गर्मी, सर्दी, भूख, प्यास आदि को सहन करना ही तप है। तप की भट्ठी में तपाये बिना वह जीवन कुन्दन नहीं बन सकता। (13) **मन्त्र**-मन्त्र का अर्थ है विचार, ज्ञान। ज्ञानहीन व्यक्ति संसार में रहकर भी अन्धे के समान है। बिना ज्ञान-चक्षु के कर्त्तव्य और अकर्त्तव्य को न समझता हुआ प्राणी कुमार्ग पर चलकर अपने जीवन को विनष्ट कर डालता है और दु:ख भोगता है। मन्त्र शक्ति का होना अत्यन्त आवश्यक है। (14) **कर्म**-ज्ञान के साथ-साथ कर्म का होना अत्यन्त आवश्यक है। '**ज्ञानं भार: क्रियां विना**' अर्थात् यदि ज्ञान को कर्म का रूप न दिया जाय अर्थात् ज्ञान के अनुसार कर्म न किया जाय तो वह ज्ञान तो भार के समान होता है। ज्ञान के अनुकूल कर्म ही प्रशंसनीय है। रावण ज्ञानी होकर भी और वेदों का पण्डित होकर भी तदनुकूल आचरण (कर्म) न होने से संसार में निन्दा का पात्र समझा जाता है। अत: ज्ञानपूर्वक कर्म का होना भी अनिवार्य है। (15) **लोक**-लोक का अभिप्राय है निवासस्थान, मनुष्य के रहने के लिये किसी न किसी निवास स्थान का होना भी आवश्यक होता है। अन्न, वस्त्र और आवास ये तीनों वस्तुयें जीवन में सबसे अधिक आवश्यक है। (16) **नाम**-सामाजिक जगत् में परस्पर व्यवहार के लिये नाम की भी बहुत आवश्यकता होती है। कोई भी ऐसा मनुष्य समाज में नहीं होगा जिसका कोई न कोई नाम अथवा संकेत न हो। बिना नाम के सांसारिक व्यवहार में बाधा उत्पन्न होती है अत: नाम का भी होना आवश्यक है।

इस प्रकार ये आत्मा की सोलह कलायें हैं। जब तक आत्मा शरीर में रहता है तब तक ये कलायें आत्मा के साथ रहती हैं। जिस प्रकार नदियाँ जब तक समुद्र में नहीं मिल जाती तभी तक उन नदियों के गंगा-यमुना आदि पृथक्-पृथक् नाम रहते हैं। समुद्र में मिल जाने पर उनके नाम और रूप समाप्त हो जाते हैं। एकमात्र समुद्र का नाम रह जाता है। इसी प्रकार जब तक ये कलायें आत्मारूपी समुद्र में नहीं मिल जातीं तभी तक इनकी पृथक् सत्ता (स्थिति) है। परन्तु जब आत्मा मुक्त होकर इस शरीर को छोड़कर परमात्मा को प्राप्त कर लेता है तब ये कलायें उस आत्मा में विलीन हो जाती हैं। उस समय केवल आत्मा (पुरुष) नाम ही शेष रह जाता है। आत्मा समुद्र के समान है। 16 कलायें नदियों के समान हैं और परमात्मा मानो भूमण्डल (पृथिवी) पर आनन्द के साथ लहलहाता है। जैसे कि यह समुद्र गंगा-यमुना आदि नदियों को अपने अन्दर समेटकर भूमण्डल पर लहलहाता है।

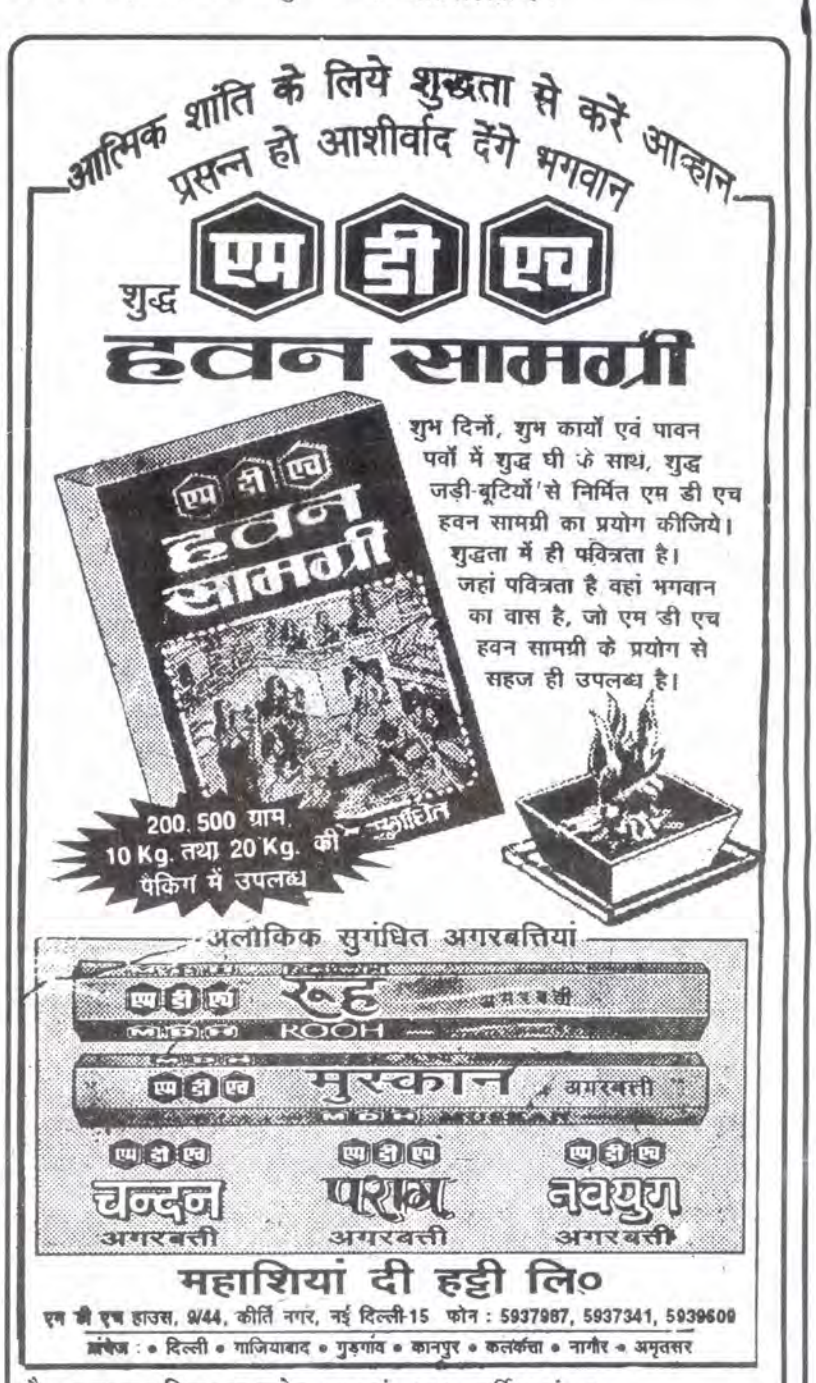

मै० **कुलवन्त पिक्कल स्टोर,** शाप नं० 115, मार्किट नं० 1, एन.आई.टी., फरीदाबाद-121001 (हरि०)
मै० **मेवाराम हंसराज,** किराना मर्चेन्ट, रेलवे रोड, रिवाड़ी-123401 (हरि०)
मै० **मोहनसिंह अवतारसिंह,** पुरानी मण्डी, करनाल-132001 (हरि०)
मै० **ओमप्रकाश सुरिन्द्र कुमार,** गुड़ मण्डी, पानीपत-132103 (हरि०)
मै० **परमानन्द साईं दित्तामल,** रेलवे रोड, रोहतक-124001 (हरि०)
मै० **राजाराम रिक्खीराम,** पुरानी अनाज मण्डी, कैथल-132027 (हरि०)

प्रभु मिलन की राह..... प्रथम पृष्ठ का शेष.....

भोगाः न भुक्ताः वयमेव भुक्ताः,
तपो न तप्तं वयमेव तप्ताः।
कालो न यातो वयमेव यातास्तृष्णा
न जीर्णा वयमेव जीर्णाः॥

मैं भी कितना मूर्ख हूँ कि विषय को भोगने की इच्छा में निरन्तर डूबे रहने पर भी मैं इन्हें क्या भोगता हूँ। इन भोगों ने ही मुझे भोग लिया। मैं प्रभु के चरणों में ध्यान लगाकर तप क्या करता, संसार के तापों ने ही मुझे तपा दिया। मैं भोगों में समय को नष्ट करता रहा, परन्तु यह समय तो नष्ट नहीं हुआ, मैं ही नष्ट हो गया। मेरी तृष्णा तो समाप्त नहीं हुई, मेरा यौवन ही समाप्त हो गया और मैं वृद्धावस्था में आज सब कुछ गंवाकर मृत्यु के कगार पर खड़ा हूँ।

कवि का यहाँ भाव निराशा से भरा हुआ है। वह वृद्धावस्था में पहुँचकर सोचता है कि सम्पूर्ण जीवन में उसने क्या प्राप्त किया? विषय भोग से कुछ प्राप्त तो नहीं हुआ, उल्टे यौवन और शरीर क्षीण हो गया। सारी आयु नष्ट हो गई, किन्तु तृष्णा की पूर्ति नहीं हुई। परन्तु अब मेरे पछताने से क्या होता है? अब तो सब कुछ नष्ट हो गया। न शरीर में शक्ति है, न आयु। अब प्रभु के चरणों में ध्यान लगाना चाहूँ तो कुछ भी प्राप्त नहीं होगा। परन्तु ऐसा नहीं है-जो बीती सो बीती लेकिन बाकी उमर संभाल लूँ मैं। इस आशय से मुझे पुनः परोपकार के कार्यों में लगना होगा।

सम्पूर्ण इच्छाओं को ज्ञानाग्नि में भस्म करके परमार्थ भाव से शरीर रक्षा हेतु उत्पन्न सीमित आवश्यकताओं की पूर्ति करने वाला मनुष्य अपने जीवन का स्वामी होता है और ऐसे स्वामी के हृदय में शान्ति की ऐसी गंगा प्रवाहित होती है कि उसके सम्पर्क में आने वाला प्रत्येक मनुष्य शान्ति का अनुभव करता है।

एक बार भी जब मनुष्य का हृदय उस प्यारे प्रभु को पाने के लिए तड़प उठता है और विरह व्यथित भक्त की हृदय वीणा जब झंकृत होकर उस प्यारे को पुकारती है तो वह निश्चित निष्कपट होकर ब्रह्माण्ड की सभी दिशाओं को चीरता हुआ उस करुणा-वरुणालय के हृदय को द्रवित कर देता है। वे कोमल हृदय प्रभु अपने प्यारे भक्त को मिलने के लिए तड़प उठते हैं। प्रभु को रिझाने के लिए कर्मों के आडम्बर की आवश्यकता नहीं, वाक्चातुरी से मनुष्य प्रभु को रिझा नहीं सकता। प्रभु के दर पर आना अर्थात् परोपकार के कार्य में अपने जीवन को लगाना, साधना करने और स्वाध्याय करने की आवश्यकता है।

यदि हमें कोई सामान चाहिए तो सबसे पहले हम यह पता करेंगे कि यह सामान किस नगर में मिलता है? फिर उस नगर की किस बाजार में बढ़िया और सस्ता सामान मिलता है? यह पता करके हम वहाँ जायेंगे। परन्तु ईश्वर को पाना चाहते हैं तो कहीं भी जाने की आवश्यकता नहीं। जिस तरह वायु हमारे चारों ओर, ऊपर-नीचे प्रत्येक क्षण रहती है, परन्तु हमें दिखाई नहीं देती उसी प्रकार परमात्मा भी प्रत्येक क्षण हमारे चारों ओर विद्यमान होता है क्योंकि वह सर्वव्यापक है तथा सर्वान्तर्यामी सर्वदृष्टा होने के कारण उसकी दृष्टि प्रत्येक कृति, विचारधारा और कर्म पर होती है। अतः हमें परमात्मा के सूक्ष्म रूप देखने के लिए हमें बुद्धि भी सूक्ष्म करनी होगी। प्रारम्भ में हमारी बुद्धि सूक्ष्म ही थी। बाद में हमारी बुद्धि संसार के विषय-विकारों, संसार की बातों, संसार के कार्य-व्यवहारों तथा विभिन्न वासनाओं की मोटी परत हमारी सूक्ष्म बुद्धि पर चढ़ गई। जब तक हम अपनी बुद्धि से इन मोटी परतों को हटा नहीं लेंगे, हमें उस परमपिता परमात्मा का साक्षात्कार नहीं होगा। इन परतों को हटाने के लिए विस्तृत ज्ञान की विशेष आवश्यकता है।

जिस तरह एक मृग कस्तूरी की सुगन्ध में झूमता हुआ उस सुगन्ध को इधर-उधर पेड़ों में, पत्तों में ढूंढ़ता-फिरता रहता है, परन्तु वह सुगन्ध उसे नहीं मिलती। वास्तविकता यह है कि सुगन्धि उसकी नाभि में है, परन्तु उसे इसका ज्ञान नहीं होता। जब उस मृग को सुगन्ध का स्रोत मिल जाएगा तो उसकी सारी क्रियाएं रुक जायेगी। अब वह मृग अपनी नासिका को नाभि के साथ लगाकर शान्ति से बैठ गया। इसी प्रकार परमपिता परमात्मा हमारे अंग-संग है परन्तु बुद्धि की मोटी परतें इसमें बाधा बनती हैं। इसके लिए हमें क्रियाशील बनना होगा, सतत अभ्यास करना होगा, वैराग्य एवं स्वाध्याय को जीवन का अंग बनाना होगा। हमें भी अन्तर्मुखी होना होगा। प्रभु का तभी साक्षात्कार हो जायेगा।

यदि पृथ्वी तैयार हो और कुशल कृषक ठीक ढंग से बीज डाल दें तो कोई कारण नहीं कि वह बीज अंकुरित न हो और पुनः उस अंकुरित पौधे को समय पर जल और खाद मिलता रहे तो एक न एक दिन वह पौधा एक विशाल वृक्ष का रूप ले लेता है और वृक्ष सुन्दर पुष्पों और फलों से युक्त हो जाता है। उसी प्रकार जब साधक की अन्तःकरण रूपी पृथ्वी प्रभु की अनुग्रह रूपी वर्षा से तैयार हो और सच्चा मार्गदर्शक गुरु प्रभु के पवित्र नाम का बीज डाल दे तो वह बीज निश्चित ही अंकुरित होगा और साधक रूपी जल एवं नियम, संयम रूपी खाद से बढ़ता हुआ एक वृक्ष एक न एक दिन भक्ति पुष्पों से अलंकृत होकर ज्ञानरूपी सुन्दर फल को धारण करेगा।

इस बात को समझाने के लिए एक दृष्टान्त प्रस्तुत है—एक व्यक्ति को एक बन्दर पसन्द आ गया और वह उसे पकड़ना चाहता था। उसने एक लोटा लिया। उस लोटे में कुछ भुने चने डालकर उसे वृक्ष के नीचे जिस पर बन्दर बैठा था, वृक्ष की जड़ के साथ बांध दिया। बन्दर नीचे उतरा। उसने देखा कि लोटे में चने हैं। हम सब जानते हैं कि भुने चने बन्दर की सबसे बड़ी पसन्द है। उसने सोचा कि लोटे को उठाकर पेड़ के ऊपर ले जाता हूँ और शनैः-शनैः खाता रहूँगा। जब उससे लोटा नहीं उठा (क्योंकि वह वृक्ष की जड़ से बंधा हुआ था) तो उसने सोचा कि एक मुट्ठी भर के चलता हूँ। उसने अपना हाथ लोटे में डाला और मुट्ठी भर ली। मुट्ठी भरने से उसकी हथेली मोटी हो गई। अब वह हाथ लोटे से बाहर नहीं आ रहा था। अब या तो चने छोड़ दे तब उसका हाथ वापिस आ सकता था। परन्तु नहीं, अज्ञानी बन्दर ने सोचा कि लोटे ने उसका हाथ पकड़ लिया है। बहुत अधिक प्रयत्न करने पर जब उसका हाथ बाहर नहीं निकला तो वह थक हारकर बैठ गया। इतने में वह व्यक्ति आ गया, बन्दर ने अपनी ओर इस व्यक्ति को देख भी लिया परन्तु लोभवश चने नहीं छोड़े और उस व्यक्ति ने उस बन्दर को दबोच लिया। इस दृष्टान्त का भाव यह है कि हम संसार के कार्य व्यवहार में परिवार के मोह में धन एकत्रित करने में इतने व्यस्त हो जाते हैं कि हमें कुछ नहीं सूझता। यदि वह बन्दर लोभ में न आता तो वह बच सकता था। इसी प्रकार हम भी उस बन्दर के समान विभिन्न प्रकार के काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार रूपी चनों में फंसे हुए हैं। परन्तु बन्धुओ! यह धन हमारे साथ नहीं जायेगा। हाँ, धर्म कर्म में लगा हुआ धन हमारी पूंजी बनेगा। परन्तु यह भवन, गाड़ियाँ तथा अन्य साजो-सामान हमारे साथ जाने वाला नहीं है। यदि जायेगा साथ तो यह मन, हमारी आत्मा, हमारा आचार, हमारा व्यवहार, हमारा कर्म। ठीक ही तो कहा है उस प्रभु से साक्षात्कार के लिए न धन की आवश्यकता है, न रूप की, न यौवन की, न उच्च कुल की, बल्कि प्रभु से मिलने के लिए यजुर्वेद के 40वें अध्याय के प्रथम मन्त्र को अपने जीवन का अंग बनाना होगा—

ओ३म् ईशावास्यमिदं सर्वं यत्किञ्च जगत्यां जगत्। तेन त्यक्तेन भुंजीथा मा गृधः कस्यस्विद्धनम्॥

(इदम् सर्वम्) यह सब (यत्किञ्च) जो कुछ (जगत्याम्) पृथिवी पर (जगत्) चराचर वस्तु है (ईशा) ईश्वर से (वास्यम्) आच्छादित है (तेन) उसी ईश्वर के (त्यक्तेन) दिए हुए पदार्थों से त्यागपूर्वक (भुञ्जीथा) भोग कर (कस्यस्वित्) किसी के कभी (धनम्) धन का (मा गृधः) लोभ मत कर। अतः परमपिता परमात्मा को सर्वव्यापक मानते हुए जीवन व्यवहार के लिए जीवन चलाने के लिए वस्तुओं का भोग हम अवश्य करें, उसमें लिप्त न हो, कमल के समान कीचड़ में रहकर भी अपने आपको इस संसार में लिप्त न करें। प्रभु के भक्तिमार्ग को ज्ञानपूर्वक अपनाते हुए अपने जीवन को सार्थक करें, यही श्रेष्ठ एवं उत्तम मार्ग है।

संपर्क-4/44, शिवाजी नगर, गुड़गांव, हरियाणा, 09911197073

'आर्य प्रतिनिधि' साप्ताहिक के सदस्य ध्यान दें

'आर्य प्रतिनिधि' साप्ताहिक के सदस्यों से अनुरोध है कि यदि आपकी सदस्यता समाप्त हो रही है, तो कृपया पत्रिका का वार्षिक शुल्क पुनः भेजकर उसका नवीनीकरण करवा लें जिससे आपको 'आर्य प्रतिनिधि' साप्ताहिक नियमित प्राप्त होती रहे। आर्य प्रतिनिधि साप्ताहिक का वार्षिक सदस्यता शुल्क 150/- रुपये व आजीवन सदस्यता शुल्क मात्र 1500/- रुपये है। आप अपना धनादेश (मनीऑर्डर) व बैंक ड्राफ्ट आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, दयानन्दमठ रोहतक के पते पर प्रेषित करें।

सम्पादक, 'आर्य प्रतिनिधि' साप्ताहिक, दयानन्दमठ, रोहतक
फोन : 01262-216222, मो० 08901387993

पटेल जयन्ती पर भरतलाल शास्त्री सम्मानित हुए

हांसी, 2 नवम्बर : पटेल स्मारक गोंसाई गेट हांसी में लौहपुरुष सरदार वल्लभ भाई पटेल की 140वीं जयन्ती के पावन अवसर पर आर्यजगत् के भारत विख्यात वैदिक मनीषी आचार्य भरतलाल शास्त्री को सम्मानित किया।

इस आशय की जानकारी देते हुए वैदिक प्रवक्ता आचार्य रामसुफल शास्त्री ने बताया कि हांसी से गुडगांव शिफ्ट हो चुके आचार्य भरतलाल को गुर्जर सभा के प्रधान फतेहसिंह गुर्जर ने विशेष रूप से आमन्त्रित कर हांसी नगर की विशेष सेवाओं के लिए उन्हें यह सम्मान प्रदान किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता गुर्जर महासभा के प्रधान फतेहसिंह गुर्जर ने की।

आचार्य रामसुफल शास्त्री ने बताया कि सरदार वल्लभ भाई पटेल का चित्र अंकित स्मृतिचिन्ह भेंट करके भरतलाल शास्त्री को सम्मानित किया गया।

इस मौके पर महंत सागरनाथ, गोपीचन्द सैनी, पूर्व सरपंच भगवान दास, सुरेश गुर्जर एडवोकेट, जगदीश भाटिया, पवन सैनी, रामनिवास फौजी, प्रेम वर्मा, मा. भरत सिंह, रामकुमार कसाना, राजेश भडाना, रमेश जैन, पटेल बांगा, सरदार कृष्ण इलावादी आदि अनेक नर-नारी व बच्चे भी उपस्थित थे।

ऋषि दयानन्द ने जग का उपकार किया

अन्धकूप में पड़े जगत् का, ऋषि ने खोल द्वार दिया।
निज प्राणों की आहुति देकर, जगती का उपकार किया॥

माता-पिता बन्धुओं को छोड़ा, सब रिश्तों से नाता तोड़ा।
विषयों के बन्धन को तोड़ा, सच्चे शिव से नाता जोड़ा॥
परोपकार की खातिर ऋषि ने, जीवन अपना वार दिया। निज प्राणों..... ॥
भूतमय भ्रम को तोड़ा, जर्जर जंगी जंजीरों को तोड़ा।
अन्धविश्वास पाखण्ड तोड़ा, पोपपण्डों के गढ़ को तोड़ा।
वेदों की शिक्षा फैलाकर, कुप्रथा का संहार किया। निज प्राणों..... ॥
सर्वत्र फैला अन्धकार था, कुरीतियों से जीवन ख्वार था।
स्त्री शूद्र को नहीं अधिकार था, चारों ओर मचा हाहाकार था।
ओ३म् पताका कर में लेकर, ढोंगियों को ललकार दिया। निज प्राणों..... ॥
बालविवाह, बहुविवाह हटा, दलितों का उद्धार करवाया।
छूत-अछूत जाति-पाति हटा, दलितों का उद्धार करवाया।
ब्रह्मचर्य के तप-त्याग से, खल दल पर प्रहार किया। निज प्राणों..... ॥
श्राद्ध तर्पण गरुड़ पुराण अवतारवाद गलत ठहराया।
गंडे ताबीज झाड़-फूंक जाटू-टोनों को ढोंग बतलाया।
वैदिक विद्या फैलाकर मिथ्या ग्रन्थों का असर उतार दिया। निज प्राणों..... ॥
ब्रह्मचर्य का नित्य पालन, संयमी जीवन बतलाया।
यम-नियम कसरत से लम्बे जीवन का रहस्य बताया।
पर्यावरण की शुद्धि हेतु नित्य हवन-यज्ञ हथियार दिया। निज प्राणों..... ॥

—देशराज आर्य, सेवानिवृत प्रधानाचार्य,
म०नं० 725, सै०-4, रेवाड़ी, मो० 9416337609

आनन्द पर्व सम्पन्न

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा एवं आर्य युवा समाज राजस्थान के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित आनन्द पर्व जो कि महात्मा आनन्द स्वामी के जन्मोत्सव के रूप में 16 व 17 अक्टूबर को डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, कोटा राजस्थान में मनाया गया, इस अवसर पर 151 कुण्डीय यज्ञ का आयोजन भी किया गया। इस भव्य आयोजन के मुख्य अतिथि श्री पूनम सूरी जी, प्रधान प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, दिल्ली ने ऋषि परम्परा को जीवन में अपनाने की बात कही। सर्वप्रथम श्री प्रधान जी ने मंच पर आर्यसमाज के महात्माओं एवं विद्वानों का सम्मान किया जिसमें महात्मा विश्वमुनि संरक्षक जिला वेदप्रचार मण्डल महेन्द्रगढ़ (बाछौद), श्री कृष्णानन्द मांदी नारनौल, आचार्य विश्वपाल गुरुकुल दाधिया, श्री विष्णु आर्य मांचल बहरोड़ को शाल व धनराशि व प्रशस्ति-पत्र देकर सभी को सम्मानित किया गया जो आर्यसमाज के लिए गौरव की बात है। महात्मा विश्वमुनि आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा रोहतक के मिर्जापुर बाछौद आर्यसमाज से प्रतिनिधि भी है। सन् 1965 से क्षेत्र में आर्यसमाज सेवा में कर्मठ कर्मयोगी की तरह सेवा दे रहे है। 100 ग्रामों में आर्यसमाज स्थापित की है। पुस्तकालय, गोसेवा प्रचार में भी श्री आचार्य योगेन्द्र जी की भी मदद की है। ग्रामीण जनसेवा समिति, जय जीव कल्याण संस्थान, जिला वेदप्रचार मण्डल महेन्द्रगढ़ एवं प्राकृतिक चिकित्सा समिति द्वारा सम्मानित किये जा चुके हैं। इनका समाज आभार प्रकट करता है।

-रोशनलाल, प्रधान जिला वेदप्रचार मण्डल, महेन्द्रगढ़ एवं महात्मा विश्वमुनि, संरक्षक जिला वेदप्रचार मण्डल महेन्द्रगढ़ हरियाणा 09416885535

पं० चन्द्रभानु आर्य की 50वीं..... पृष्ठ 2 का शेष.....

लिए हृदयस्पर्शी संदेश दिया, जिसका बहुत भारी प्रभाव रहा।

सार्वजनिक अभिनन्दन

हिमाचल के राज्यपाल का पद ग्रहण करने के बाद आचार्यजी का यह प्रथम जींद आगमन था। अत: जींद की अनेक सामाजिक संस्थाओं द्वारा आचार्यजी का सार्वजनिक अभिनन्दन किया गया। सर्वप्रथम जिला वेद प्रचार मण्डल के प्रधान मा. रायसिंह आर्य जी ने पगड़ी पहनाकर आचार्यजी का सम्मान किया। पं. चन्द्रभानु आर्य धर्मार्थ ट्रस्ट व शांतिधर्मी की ओर से पं. जी के सुपुत्र सर्वश्री रमेशचन्द्र आर्य, सहदेव समर्पित, रवीन्द्र कुमार आर्य, पौत्र सत्यव्रत आर्य व ट्रस्टी श्री सुभाष श्योराण ने शॉल, स्मृति चिह्न व अभिनन्दन-पत्र भेंट कर आचार्य जी का अभिनन्दन किया।

पं० चन्द्रभानु के पैतृक गांव लोहारी की ग्राम पंचायत, जींद मैढ सुनार सभा, जनहित विकास परिषद्, आर्य वीर दल जींद, भारतीय योग संस्थान, पतंजली योग समिति, भारत विकास परिषद् आदि सामाजिक संस्थाओं ने आचार्य जी का अभिनन्दन किया। आर्यसमाज जींद शहर, आर्यसमाज जींद जंक्शन, आर्यसमाज रामनगर, आर्यसमाज डीएवी स्कूल, महिला आर्यसमाज जींद, आर्यसमाज नरवाना, आर्य समाज डोहानाखेड़ा, आर्यसमाज उचाना मण्डी, ग्राम खटकड़, ग्राम अहिरका की ओर से भी आचार्य जी को शॉल व स्मृति चिह्न भेंट किये गए।

पं० स्वरूपलाल आर्य का हुआ सम्मान

कार्यक्रम के संयोजक श्री सहदेव समर्पित सम्पादक शांतिधर्मी ने कहा कि ट्रस्ट का उददेश्य स्व. पं. चन्द्रभानु आर्य के कार्यों को आगे बढ़ाना है। नये भजनोपदेशकों का निर्माण और वयोवृद्ध भजनोपदेशकों की सहायता व सम्मान ट्रस्ट का मुख्य कार्यक्रम रहेगा। इस क्रम में वयोवृद्ध प्रचारक और समर्पित कार्यकर्त्ता श्री महाशय स्वरूपलाल आर्य का ट्रस्ट की ओर से आचार्य जी के कर कमलों से सम्मान करते हुए उन्हें शॉल एवं स्मृतिचिह्न भेंट किए गए।

पं० चन्द्रभानु आर्य की 85वीं जयन्ती के अवसर पर आयोजित इस कार्यक्रम का नगर की जनता पर व्यापक प्रभाव रहा। प्रारम्भ से कार्यक्रम की समाप्ति तक एक हजार की क्षमता वाला हिन्दू कन्या महविद्यालय का सभागार खचाखच भरा रहा। स्थानीय टीवी चैनलों और समाचार पत्रों ने इस कार्यक्रम को भरपूर कवरेज दी। इस अवसर पर पं० चन्द्रभानु आर्य द्वारा लिखित पुस्तक महर्षि दयानन्द जीवन गाथा का वितरण किया गया।

नरेश सिहाग एडवोकेट
सह-सम्पादक शांतिधर्मी

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के स्वामित्व में मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक **मा० रामपाल आर्य** ने दुर्गेश्वरी प्रिंटर्स, माता मन्दिर चौक, पाड़ा मोहल्ला, रोहतक से मुद्रित एवं कार्यालय, सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक-124001 से प्रकाशित। पत्र में प्रकाशित लेखसामग्री से मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं।
प्रत्येक विवाद के लिए न्यायक्षेत्र रोहतक न्यायालय होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जाएगी।